

**कहा-सुनी स्त्री.** (देश.) 1. उत्तर-प्रत्युत्तर 2. हुज्जत 3. भूलचूक 4. तकरार, विवाद उदा. प्रायः इन दोनों भाइयों में कहासुनी होती ही रहती है।

**कहिअ क्रि.वि.** (देश.) 1. काहे, किसलिए 2. क्यों।

**कहिया क्रि.वि.** (देश.) किस रोज, किस दिन स्त्री. (तद्.) धातुओं के बरतनों को रांगा रखकर जोड़ने में प्रयुक्त एक उपकरण या औजार।

**कहीं<sup>1</sup> पुं.** (देश.) 1. एक समय से हटकर किसी दूसरी जगह, बिल्कुल अलग या बहुत दूर, कहीं न कहीं, किसी न किसी स्थान पर, कहीं-कहीं-कुछ अवसरों या स्थलों पर मुहा. कहीं का न रहना-किसी भी काम या पद के योग्य न रहना 2. ऐसा स्थान जिसका उल्लेख न किया गया हो उदा. यह पुस्तक कहीं रख दीजिए 3. किसी अज्ञात पर संभावित अवस्था या दशा में।

**कहीं<sup>2</sup> क्रि.वि.** (अव्य.देश.) 1. अज्ञात एवं अनिश्चित जगह या स्थान उदा. मेरे भाई साहब तो आज कहीं चले गए हैं, कहीं और- किसी दूसरे स्थान पर, कहीं का- न जाने किस स्थान का (उपेक्षात्मक भाव से)।

**कहूँ क्रि.वि.** (देश.) किसी स्थान पर, किसी जगह कहीं उदा. न कहूँ गयौ न आयौ -सूरदास 4/13) 2. किसी- वह आई कहूँ और गाँव है -सूरसागर (10/2157) 3. के लिए, को, वास्ते उदा. राज देन कहूँ शुभ दिन साधा -तुलसी मानस- 54/4)

**कहूँक क्रि.वि.** (देश.) 1. कहीं 2. कहीं-कहीं 3. कभी।

**कहूँ-कहूँ क्रि.वि.** (देश.) कहीं-कहीं।

**कहूँ क्रि.वि.** (देश.) कहीं उदा. 'कहूँ पीत, कहूँ लाल, कहूँ सित -देव दीपशिख (52)।

**कहूँक क्रि.वि.** (देश.) कहीं-कहीं।

**कहेसि स.क्रि.** (देश.) कहा, कहा गया, कहे उदा. कहेसि-अमित आचरज बखानी -तुलसी-मानस (1/163/3)।

**कांक्षणीय वि.** (तत्.) चाहने वाला।

**कांक्षा स्त्री.** (तत्.) आकांक्षा, इच्छा, चाह, चाहना।

**कांक्षित वि.** (तत्.) 1. चाहा हुआ, वांछित 2. जिसकी इच्छा या चाहना की गई हो।

**कांक्षी वि.** (तत्.) इच्छा करने वाला, आकांक्षा करने वाला, आकांक्षी, इच्छुक।

**कांचन पुं.** (तत्.) 1. सोना, स्वर्ण 2. कंचन 3. धन-संपत्ति 4. कचनार 5. चंपा 6. नागकेशर 7. गूलर 8. धतूरा वि. 1. उत्तम, श्रेष्ठ 2. परम सुंदर।

**कांचनक पुं.** (तत्.) 1. हरताल 2. चंपा (पौधा एवं फूल)।

**कांचनगिरि पुं.** (तत्.) सुमेरु पर्वत, स्वर्ण का पहाड़।

**कांचनजंगा पुं.** (तत्.) कांचन शृंग, नेपाल और सिक्किम के मध्य स्थित हिमालय पर्वत की एक चोटी, 'कांचनचंगा' की चोटी।

**कांचन पुरुष पुं.** (तत्.) मृतक के श्राद्ध के समय शय्या पर रखकर दान में दी जाने वाली सोने की मूर्ति।

**कांचनी स्त्री.** (तत्.) 1. गोरोचन 2. हल्दी वि. कंचन की, सोने की, 'कांचनीय'।

**कांची स्त्री.** (तत्.) स्त्रियों के द्वारा पहने जाने वाली छोटी-छोटी घंटियों वाली एक प्रकार की करधनी 2. कांजीवरम (दक्षिण भारत), प्राचीन भारत की सात पवित्र नगरियों में से एक-कांची टि. "अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवंतिका, पुरी द्वारावती चैव सहोता मोक्षदायिकाः 3. घुंघुची 4. कपड़ों पर टाँकने का गोटा पट्टा।

**कांजी स्त्री.** (तत्.) 1. ऊख के रस में नमक, राई आदि डालकर तैयार किया जाने वाला एक प्रसिद्ध पेय पदार्थ जो स्वाद में खट्टा होता है 2. मट्ठे या दही का पानी, छाछ 3. बिगड़ा या फटा हुआ दूध।

**कांडकार पुं.** (तत्.) 1. बाण बनाने वाला 2. सुपारी का पेड़।

**कांड-तिक्त पुं.** (तत्.) चिरायता।

**कांडत्रय पुं.** (तत्.) तीन कांडों (कर्मकांड, ज्ञानकांड तथा उपासना कांड) का समूह।